स्मृति साहित्य में वर्षित ब्रह्मचर्यानुशासन तथा प्रासंगिकता

डॉ. बदलू राम

सह आचार्य संस्कृत

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (राज0)

प्रस्तावना- भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक तथा धर्म प्रधान संस्कृति रही है। भारतीय संस्कृति की धारा वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, स्मृतियों आदि ग्रन्थों से निसृत हो निरन्तर गतिमान हो रही है तथा निरन्तर अपनी जड़ों से ऊर्जा प्राप्त कर रही है।

भारतीयसंस्कृति में मनुष्य जीवन मूल लक्ष्य पुरूषार्थ चतुष्ट्य बताया गया है। मानव अविराम गति से अपने लक्ष्य तक पहुंच परम सत्ता में विलीन हो मोक्ष की प्राप्ति करे, इस हेतु हिन्दू संस्कृति में आश्रम व्यवस्था, संस्कार विधि, वर्ण व्यवस्था आदि की व्यवस्था मिलती है जिसके अनुसार मनुष्य समयानुसार अपने धर्म का पालन करता हुआ मनुष्य जन्म को सार्थक करता है और इस लोक में स्वयं सुखी रहकर तथा दूसरों को सुखी रखकर परलोक में भी परमानन्द को प्राप्त करता है।

मनुष्य जन्म से पशुतुल्य होता है। जन्म के बाद संस्कारों तथा ज्ञान से उसमें मनुष्यत्व के गुण उभर कर आते हैं।

मुख्य शब्द - वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, स्मृति, धर्मशास्त्र

अतः मनुष्य के लिए जन्म से मृत्यु तक प्राचीन मनीषियों ने कुछ अनुशासन निश्चित किए हैं। वेदों, स्मृतियों तथा अन्य धर्मशास्त्र ग्रन्थों में मनुष्य जीवन के लिए निर्देशित किए गए अनुशासन को ही धर्म कहा जाता है।

जीवन के हर क्षेत्र में निश्चित किए गए अनुशासनों में ब्रह्मचर्य काल हेतु अनुशासन अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन की प्रथम अवस्था होती है जिसमें बालक में अच्छे या बुरे संस्कार समाहित होते हैं। बालक में अच्छे संस्कार स्थापित हों वह अकृत्य या त्याज्य कर्मों को पहचानते हुए उनसे दूर रहे इस हेतु धर्मशास्त्र ग्रन्थों में विस्तार से वर्णन मिलता है। किन्तु शोध पत्र की सीमा को ध्यान में रखते हुए केवल स्मृति ग्रन्थों में दिए गए ब्रह्मचर्यानुशासन से सम्बन्धित मुख्य धर्मों को यहां उद्धृत किया गया है। ब्रह्मचर्यानुशासन के विषय में महर्षि हारीत लिखते हैं -

ब्रह्मचर्यमधः शय्या तथा वह्नेरूपासना ।
उदकुम्भान् गुरोर्दद्यात् गोग्रासन्वेन्धनानि च ।।
कुर्य्यादध्ययनञ्चैव ब्रह्मचारी यथाविधि ।
विधिं त्यक्त्वा प्रकुर्व्वाणो न स्वाध्याय फलं लभेत ।।[1]

अर्थात् ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य का पालन करें, भूमि पर शयन करे, अग्निहोत्र यज्ञ सम्पन्न करे, मुँह के लिए जल पूरितघट और भोजन के लिए ईंधन की व्यवस्था करे। गौओं को चारा दे, ब्रह्मचारी शास्त्रोक्त विधिपूर्वक अध्ययन करे क्योंकि विधि से रहित पठन फलदायी नहीं होता ।

महर्षि हारीत कहते हैं कि ब्रह्मचारी वेदाध्ययन की सिद्धि के लिए गुरूकुल में रहते हुए, वेद व्रतों का पालन करे और गुरू के पास रहते हुए समस्त आचरणों को सीखे।[2]

ब्रह्मचारी आश्रम में रहते हुए मृगचर्म, दण्ड, मेखला व यज्ञोपवीत को सावधानी से अप्रमत्त होकर धारण करे ।

अजिनंदण्डकाष्ठञ्च मेखलाञ्चोपवीतकम् ।

धारयेदप्रमतश्च ब्रह्मचारी समाहितः ।। [3]

ब्रह्मचारी इन्द्रियों को नियन्त्रित कर भोजन के लिए सांयकाल और प्रातःकाल भिक्षाटन करे, नित्य सावधानीपूर्वक आचमन करे और भिक्षाटन से पूर्व दन्तधावन करे | छत्र धारण, पहनना, गन्ध, माला, नृत्य, गान, बहु सम्भाषण तथा मैथुन छोड़ दे।

सांयप्रातश्चरेदभैक्षं भोज्यार्थ संयतेन्द्रिय।आचम्य प्रयतो नित्यं च कुर्याद्दन्तधावनम् ।

छत्रञ्चोपानहञ्चैवगन्धमाध्यादि वर्जयेत् । नृत्यगीतथालापं मैथुनञ्च विवर्जयेत् ।।

1. हारीत स्मृति, तृतीय अध्याय / 2
2. हारीत स्मृति, तृतीय अध्याय / 4
3. हारीत स्मृति, तृतीय अध्याय / 5
4. हारीत स्मृति, तृतीय अध्याय / 2

संवर्त स्मृति में भी सायं व प्रातः भिक्षाटन का विधान है।

हारीत स्मृति में ब्रह्मचारी के लिए हाथी, घोड़े की सवारी का भी निषेध बताया गया है।[5]

ब्रह्मचारी के धर्मों का कथन करते हुए महर्षि संवर्त कहते हैं कि पूर्वा संध्या में ब्रह्मचारी खड़े होकर ध्यानावस्थित होकर गायत्री का जाप करें तथा सांयकालीन संध्या में आलस्य रहित होकर बैठकर गायत्री का जाप करें।

निष्ठन् पूर्वां जपं कुर्यांद् ब्रह्मचारी समाहितः ।

आसीनः पश्चिमां संध्यां जपं कुर्यादतन्द्रितः ।। [6]

महर्षि संवर्त ने ब्रह्मचारी के अनुशासन भंग करने पर प्रायश्चित् अथवा उसकी निवृत्ति के उपाय बतलाते हुए कहा है कि जो ब्रह्मचारी काम पीड़ित होकर स्त्री गमन करे, वह उसके बाद जितेन्द्रिय रहकर एक कृच्छ प्राजापत्य करे ।

ब्रह्मचारी तुयो गच्छेत् स्त्रियं कामपीड़ितः ।

प्राजापत्यं चरेत् कृच्छ्रमथवैकं सुयन्त्रितः ।। [7]

जो ब्रह्मचारी जानते हुए वीर्य स्खलित करे, वह अवकीर्ण व्रत करे । अनजाने में स्वप्न दोष में स्खलित होने पर केवल स्नान से शुद्ध हो जाता है।

ब्रह्मचारी तु यो स्कन्देत् कामतः शुक्रमात्मनः ।

अवकीर्णी व्रतं कुर्य्यात् स्नात्वा शुद्धयेदकामतः ।। [8]

जो ब्रह्मचारी दिन में सोवे वह स्नान करके सूर्य दर्शन करे तथा आठ सौ गायत्री मन्त्र जाप करे । [9]

शंख स्मृति में ब्रह्मचारी के अनुशासन के लिए कहा गया है कि ब्रह्मचारी संयमपूर्वक प्रातःकाल उठकर स्नान करके अग्नि में यज्ञ करके शान्तचित होकर, भक्ति के साथ गुरूजनों का अभिवादन करे। [10]

5. हारीत स्मृति, तृतीय अध्याय / 7 6. संवर्त स्मृति /7 7. संवर्त स्मृति / 24

8. संवर्त स्मृति / 27 9. संवर्त स्मृति / 32 10. शंख स्मृति / 4

ब्रह्मचारी हमेशा गुरू से आज्ञा लेकर ब्रह्माञ्जलि बनाकर नतमस्तक हो गुरु के मुख को निहारते हुए स्वाध्याय करे ।" ब्रह्मचारी को अध्ययन के आरम्भ में तथा अन्त में "ओम्" का उच्चारण करना चाहिए ।

शंख स्मृति में ब्रह्मचारी के लिए निषिद्ध कर्मों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मचारी मधु, मांस, अञ्जन, श्राद्ध भोजन, गीत, नृत्य, हिंसा, निन्दा, विवाद और विशेष रूप से स्त्रीयों के साथ कीड़ा का परित्याग करे ।

मधुमांसाञ्जन श्राद्धं गीतं नृत्यञ्च वर्जयेत्।

हिंसापवादनादाश्च स्त्री लीलां च विशेषतः । । [12]

गौतम स्मृति में महर्षि गौतम ने ब्रह्मचारी के लिए निषिद्ध कर्मों का निर्देश करते हुए कहा है कि ब्रह्मचारी मधु, मांस, गन्ध, माला, दिन में सोना, सुरमा, मालिश, वाहन, जूते, छाता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, बाजा बजाना, श्रंगार के लिए स्नान, दन्त धावनादि, उत्सव, नृत्य, गीत, निन्दा व भय छोड़ दे। गुरु जी के सामने कानों की असावधानी, गोड़ो को औधा करके, ऐसे ही शरीर के अन्य अंगों को सहारा लेकर और पांव पसार कर बैठने को छोड़ देवे। थूकना, हंसना, जमाई लेना, शरीर के अंगों को बजाना, मैथुन की इच्छा से स्त्रियों को देखना, उनका स्पर्श करना, जुआ खेलना, किसी भी वस्तु बिना दिए लेना, हिंसा, आचार्य, आचार्य पुत्र तथा आचार्य पत्नी को नाम लेकर बुलाना, रूखी वाणी व मदिरा पान आदि छोड़ दे ।[13]

महर्षि गौतम ने ब्रह्मचारी के कृत्य बतलाते हुए कहा है कि ब्रह्मचारी नित्य ही धरती पर सोवे, गुरू जी से पूर्व उठे। वह वाणी तथा उदर पर संयम रखे।

स्मृति ग्रन्थों में वर्चस्व रखने वाले मनुस्मृति ग्रन्थ में ब्रह्मचारी के लिए धर्म (अनुशासन) का विस्तार से वर्णन किया गया है।

11. शंख स्मृति / 6 12. शंख स्मृति / 13

13. गौतम स्मृति – मधु वर्जयेन्मधुमांस

महर्षि मनु के अनुसार ब्राह्मण बालक का गर्भ के आठवें वर्ष में, क्षत्रिय का ग्यारवें, वैश्य बालक बारवें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करें। [14]

वेदाध्ययन और धनाधिक्य प्राप्ति के ब्राह्ममण का गर्भ के पांचवे वर्ष में, विशेष बल की इच्छा से क्षत्रिय का छठे वर्ष में तथा व्यापारादि अधिक लाभ प्राप्ति की इच्छा से वैश्य बालक का आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करें। [15]

महर्षि मनु ने ब्रह्मचारी के लिए वेशभूषा क्रमशः कृष्ण मृग, रूरू मृग और बकरे के चमड़े को धारण करे तथा सन, क्षोभ, भेड़ के बालों से बने कपड़ों को पहने ।

कार्ष्णरौरववास्तानि चर्माणि ब्रह्मचारिणः ।

वसीरन्नानुपूर्वेण शाणक्षोमाविकानि च।।[16]

ब्रह्मचारी की मेखला के विषय में महर्षि मनु ने कहा है कि ब्राह्मण ब्रह्मचारी की मेखला मूंज की तीन लड़वाली कोमल हो, क्षत्रिय की धनुष की प्रत्यञ्चा की तथा वैश्य की शण से बनी मेखला हो ।

मौजी त्रिवृतसमा श्लक्ष्णा कार्याविप्रस्यमेखला ।

क्षत्रियस्य तु मौरवीं ज्या वैश्यस्य शणतान्वती ।।[17]

यदि मूंज आदि नहीं मिले तो क्रमशः कुशा, अश्मन्तक, बल्वज नामक घास की मेखला बनावें ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ब्रह्मचारी का यज्ञोपवीत क्रमशः कपास, सन, भेड़ की ऊन का बना होवे । [18]

दण्ड के विषय में महर्षि मनु कहते हैं कि ब्राह्मण का दण्ड बेल या पलाश, का बड़ या खैरी का, वैश्य का पीलू या गूलर की लकड़ी का बना हो ।

ब्राह्मणो वैल्वपलाशौ क्षत्रियो वटखादिरौ ।

पैलवौदुम्बरौ वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः ।। [19]

14. मनुस्मृति 2/36 15. मनुस्मृति 2 / 37 16. मनुस्मृति 2 / 41
17. मनुस्मृति 2/42 18. मनुस्मृति 2 / 44 19. मनुस्मृति 2 / 45

दण्ड लम्बाई के विषय में कहा है कि ब्राह्मण का दण्ड केशों तक, क्षत्रिय का ललाट तक, वैश्य का नाक तक लम्बा होना चाहिए तथा ये दण्ड सीधे, बिना कटे हुए, देखने में सुन्दर, नहीं डराने वाले, छिलका रहित तथा बिना जले हों। ऐसे दण्डों को धारण कर सूर्य की पूजा कर अग्नि की प्रदक्षिणा कर भिक्षाटन के लिए जावें ।

भिक्षा में लाए अन्न को निष्कपट भाव से गुरू जी को अर्पित कर देवें । गुरु जी की आज्ञा से आचमन कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके अन्न खावें । [20]

हमेशा ब्रह्मचारी भोजन का सम्मान करे । भोजन की निन्दा नहीं करते हुए, भोजन की पूजा करके खावे । भोजन देखकर आनन्दित व हर्षित होवे।

पूज्येदशनं नित्यमद्याच्चैदकुत्सयन ।

दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः ।। [21]

ब्रह्मचारी अपने मेखला, मृग चर्म, दण्ड, यज्ञोपवीत आदि सामान के जीर्ण-शीर्ण होने पर उन्हें जल में प्रवाहित करा देवें तथा मन्त्रों से दूसरे ग्रहण कर लें ।

शास्त्रोक्त विधि से आचमन किया हुआ, ब्रह्माञ्जलि बांधकर कम वस्त्र पहना हुआ के तथा जितेन्द्रिय, शिष्य पढ़ाने योग्य होता है । [22] पढ़ने से पहले तथा अन्त में नित्य गुरू चरण स्पर्श करना चाहिए। [23]

महर्षि याज्ञवल्क्य ने मधु, मांस, अंजन, जूठा, कठोर वचन, प्राणिवध, उदय तथा अस्त हो सूर्य को देखना, अश्लील भाषण, परदोषान्वेषण आदि को ब्रह्मचारी के लिए त्याज्य कहा है।

मधुमांसाञ्जनोच्छिष्टशुक्तस्त्रीप्राणिहिंसनम् ।

भास्करालोकनाश्लील परिवादादि वर्जयेत् ।। [24]

20. मनुस्मृति 2/51 21. मनुस्मृति 2/54 22. मनुस्मृति 2 / 70
23. मनुस्मृति 2 / 71 24. याज्ञ० आचा० / 33

उपसंहार – ब्रह्मचर्यानुशासन के विषय में स्मृतियों में अति विस्तार से वर्णन किया गया है जिसका सम्पूर्ण वर्णन करना इस शोध पत्र में संभव नहीं है। अतः ब्रह्मचारियों के लिए निश्चित किए गए मुख्य त्याज्य कर्म तथा कृत्य कर्मों तथा आचरणीय व्यवहार का वर्णन मेरे द्वारा इस शोध पत्र में किया गया है।

इन धर्मों का निर्वहन करते हुए तथा निषिद्ध कर्मों से दूर रहते हुए ब्रह्मचारी अपने लक्ष्य को प्राप्त करते थे तथा समाज में सुदृढ़ व बलिष्ठ शरीर, उज्ज्वल चरित्र व ओजस्वी व्यक्तित्व से युक्त हो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे।

वर्तमान में प्रासांगिकता

स्मृतियों में ब्रह्मचारी हेतु निर्दिष्ट अधिकांश अनुशासन या धर्म वर्तमान में प्राचीन काल से भी अधिक प्रासांगिक हैं क्योंकि वर्तमान में बालक को न तो घर से और न परिवेश से ही संस्कार मिल रहे हैं। चारों तरफ भौतिकवादी तथा दिखावटी परिवेश है।

जूठ, रिश्वतखोरी, मदिरा, शराब, जुआ, गुटका, चुर्री, अश्लील चलचित्र व साहित्य, बच्चों में अनावश्यक मोबाईल फोन का प्रयोग आदि से पूरा परिवेश ही दूषित होने से विद्यार्थी भ्रमित हो अपने पथ से भटक जाता है जिससे वह तन से तथा मन व बुद्धि से अस्वस्थ हो विभिन्न शारीरिक, मानसिक व्याधियों से ग्रसित हो रहा है और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चतुष्ट्य पुरूषार्थ प्राप्ति के विपरीत उसी दूषित समाज का हिस्सा बन रहा है ।

अतः आज भी विद्यार्थी के त्याज्य कर्म स्मृतियों में जो बताए गए हैं वे तो हैं ही उनमें गुटका, चुर्री, मद्य पान, दूषित मोबाईल फोन, अश्लील चलचित्र, फास्ट फूड, अश्लील वेशभूषा, रिश्वतखोरी, अहंकार आदि और अनके त्याज्य कर्म और जुड़ गए हैं। (इसी तरह करणीय कर्मों में भी वृद्धि हुई है)